महिलाओं का कलाओं के क्षेत्र में योगदान

डॉ० अनिता रानी
एसोसिएट प्रोफेसर
संगीत (सितार) विभाग
श्रीमती बी० डी० जैन गर्ल्स (पी० जी०) कॉलेज आगरा
ईमेलः *dr.anit80@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० अनिता रानी

''महिलाओं का कलाओं के क्षेत्र में योगदान'

Artistic Narration 2020, Vol. XI, No. II, pp. 111-115

https://anubooks.com/?page_id=6393

सारांश

नारी ईश्वर की महान कृति है वह सुंदरता की प्रतिमूर्ति है और ललित कलाओं से अत्यंत निकटता से सम्बद्ध है। ललित कलाएं आत्म अभिव्यक्ति के साथ–साथ मानसिक संतोष का भी एक सशक्त साधन हैं। आदि काल से नर व नारी कला प्रेमी रहे है। मध्ययुग में कुछ साहित्य व कला प्रेमी महिलाओं का भी उल्लेख मिलता है। इनमें रजिया बेगम, गुलबदन बेगम, नूरजहाँ बेगम, जहाँआरा और जेबुन्निसा के नाम विशेष रूप से प्रख्यात है जिन्होंने कला और साहित्य के विकास में योगदान प्रदान किया। जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ ने आगरा में एत्मादद्दौला के मकबरे का निर्माण कराया जिसमें पच्चीकारी का अत्यंत सुन्दर काम है। आगरा की प्रसिद्ध जामा मस्जिद का निर्माण का श्रेय जहाँआरा बेगम को प्राप्त है। उसने अजमेर में ख्वाजा चिश्ती की दरगाह में भी एक बड़ा हॉल बनवाया जिसके स्तम्भ अत्यंत कलात्मक षैली में बनाये गये है। कृष्ण भक्त मीराबाई ने भी एक कृष्ण मंदिर का निर्माण कराया था।

संगीत और नृत्य के प्रति महिलाओं का झुकाव प्राचीन काल से है। प्रस्तर युग में सभ्यता से कोसों दूर जंगल में निवास करने वाले लोगों में सम्भवतः भाषा की उत्पत्ति से पहले प्राकृतिक आनन्द की प्रथम अनुभूति संगीत और नृत्य के रूप में ही हुई होगी। मध्यकाल के अंतिम भाग में मुगल शासन की स्थापना के बाद संगीत व नृत्य के क्षेत्र में उन्नति होने लगी क्योकि ये शासक उदार थे और संगीत व नृत्य प्रेमी थे।

मुख्य शब्दः *महिला, ललित कलाएं, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला और साहित्य।*

प्रस्तावना

आधुनिक काल में चित्रकला के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ। महिला चित्रकारों में सर्वप्रथम सुनयनी देवी का नाम आता है और इसके बाद की उल्लेखनीय चित्रकार अमृता शेरगिल है जिसने शैली, रंग योजना, भाव आदि सभी क्षेत्रों में नवीन प्रयोग किये और चित्रकाल को विकास की ओर उन्मुख किया। चित्रकला के साथ–साथ मूर्तिकला के क्षेत्र में भी इस युग में उत्थान हुआ। आधुनिक काल में महिला संगीतज्ञों को सम्मान व लोकप्रियता दिलाने में शिक्षण संस्थाओं के साथ–साथ आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत की। वर्तमान समय में अन्य ललित कलाओं के साथ–साथ नृत्य कला के क्षेत्र में भी पर्याप्त विकास हुआ। दक्षिण भारत के मंदिरों में शास्त्रीय कला जो देवदासियों तक सीमित होकर रह गयी थी, उसे आधुनिक युग में प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और पुनर्विकास की ओर उन्मुख होने लगी। वस्तुतः ललित कला के विकास में सृजनात्मक प्रतिभा की धनि महिलाओं ने यह प्रमाणित कर दिया कि नारी केवल अबला और दासी नहीं है अपितु आत्म तत्वों को पहचानने वाली बौद्धिक क्षमता से युक्त महिला है। वह किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि महिलाओं का कलाओं के क्षेत्र में योगदान बहुमूल्य है।

नारी ईश्वर की महान कृति है वह सुंदरता की प्रतिमूर्ति है और ललित कलाओं से अत्यंत निकटता से सम्बद्ध है। व्यक्ति केवल क्षुधा तृप्ति का ही इच्छुक नहीं होता अपितु उसे मानसिक संतोष की भी आवश्यकता होती है। कहा जाता है की सुन्दर वस्तु सदैव प्रसन्नता प्रदान करती रहती है। ललित कलाएं आत्म अभिव्यक्ति के साथ–साथ मानसिक संतोष का भी एक सशक्त साधन हैं।

आदि काल से नर व नारी कला प्रेमी रहे है। भले ही उसे सभ्य रूप ग्रहण करने में सैकड़ों वर्ष लगे हो परन्तु उसमे उपलब्ध पत्थरों, हड्डियों और मिट्टी से समय–समय पर ऐसी कलाकृतियों, मूर्तियों, आभूषणों और गुफा चित्रों का निर्माण किया, जिन्हें देखकर यह स्पष्ट हो जाता है की कला के प्रति भारतीय नर–नारी का लगाव अत्यंत प्राचीन काल से था।

प्रागैतिहासिक काल में उत्खनन से जो चित्र उपलब्ध हुए है उनसे तो यही अनुमान लगाया जा सकता है कि तत्कालीन समय में कला के प्रति महिलाओं का अत्यधिक झुकाव था और कला पर्याप्त उन्नत भी थी। सिंधु काल में महिलाओं द्वारा अपनी घर द्वार की सजावट हेतु रंगोली सजाये जाने का वर्णन प्राप्त होता है जिसके अंतर्गत वे पेड़–पौधे, फूल, पशु–पक्षी और देवी–देवताओं के चित्र बनाती थीं। आज भी यह परंपरा ग्रामीण अंचल में अत्यंत प्रसिद्ध है जिसकी पुष्टि मिट्टी के बर्तनो व आभूषणों के उपलब्ध नमूनों से होती है। इस युग में राजपरिवारों में महिला चित्रकारों के होने का भी अनुभव है जो प्राकृतिक दृश्य, युद्ध के दृश्य, राजपरिवार से सम्बंधित लोगों के चित्र बनाने में पारंगत थी। वैदिक युग में चित्रकला के उन्नत होने के कई प्रमाण प्राप्त होते है जिसके अन्तर्गत गृह सज्जा और फूल सज्जा का विशेष महत्त्व प्राप्त था।

रामायण में भी उल्लेख मिलता है कि गर्भवती सीता व उर्मिला का मन बहलाने के लिए महिला चित्रकार, प्राकृतिक दृश्यों को चित्रपट पर बनाती थी। ननकू नामक एक महिला चित्रकार ने गीत गोविन्द की चित्रमाला को राजपूत शैली में बनाया था। इस समय एक मुस्लिम महिला चित्रकार, साहिफा बानो

का भी वर्णन मिलता है जोकि हुमायूँ के फारस में शरण लेने के समय उसके साथ थी। 19वीं शताब्दी के कुछ चित्रों का निर्माण पारो नामक महिला ने कांगड़ा शैली में किया था।

खुदाई में उपलब्ध मूर्तियों पर नारी कला की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। गुफाओं की दीवारों पर उत्कीर्ण कुछ स्त्रियों की मूर्तियों के बनाने में भी महिला शिल्पकारों का सहयोग लिया गया होगा। एक विद्वान ने लिखा है कि ''दूसरी शताब्दी में महिलाओं द्वारा मंदिर बनवाने, उनकी पच्चीकारी के, मूर्तियों के व भित्ति चित्रों के नमूने तथा मंदिरो व भवनों के नमूने बनाने का वर्णन प्राप्त होता है।'' उल्लेख प्राप्त है कि अमरावती में स्तूपों का निर्माण आंध्र प्रदेश की तीन रानियों ने कराया था। सातवीं शताब्दी में एक पल्लव रानी ने कांची में प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण कराया था और उसकी दीवारों को चित्रों से सजाया था। ये मंदिर केवल धर्मस्थल न होकर संस्कृति के प्रमुख केंद्र भी माने जाते है। इनके अतिरिक्त तिरुमल्लाई का शिव और विष्णु मंदिर तथा आबू का संगमरमर मंदिर भी महिला द्वारा ही बनवाया गया।

मध्ययुग में कुछ साहित्य व कला प्रेमी महिलाओं का भी उल्लेख मिलता है। इनमें रजिया बेगम, गुलबदन बेगम, नूरजहाँ बेगम, जहाँआरा और जेबुन्निसा के नाम विशेष रूप से प्रख्यात है जिन्होंने कला और साहित्य के विकास में योगदान प्रदान किया। जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ ने आगरा में एत्मादद्दौला के मकबरे का निर्माण कराया जिसमें पच्चीकारी का अत्यंत सुन्दर काम है। आगरा की प्रसिद्ध जामा मस्जिद का निर्माण का श्रेय जहाँआरा बेगम को प्राप्त है। उसने अजमेर में ख्वाजा चिश्ती की दरगाह में भी एक बड़ा हॉल बनवाया जिसके स्तम्भ अत्यंत कलात्मक शैली में बनाये गये है। कृष्ण भक्त मीराबाई ने भी एक कृष्ण मंदिर का निर्माण कराया था।

संगीत और नृत्य के प्रति महिलाओं का झुकाव प्राचीन काल से है। प्रस्तर युग में सभ्यता से कोसों दूर जंगल में निवास करने वाले लोगों में सम्भवतः भाषा की उत्पत्ति से पहले प्राकृतिक आनन्द की प्रथम अनुभूति संगीत और नृत्य के रूप में ही हुई होगी।

सिंधु काल में तो नृत्य एवं संगीत से जुड़े हुए अनेक प्रमाण उपलब्ध हुए है जो तत्कालीन लोगों के इन ललित कलाओं के प्रति रूचि के प्रबल प्रमाण हैं। वैदिक काल की नारी मूर्तियों में नृत्य मुद्रा में प्राप्त मूर्ति वीणा, बिगुल, और मृदंग बजाती मूर्तियां सिद्ध करती है कि इस काल में नृत्य व संगीत कला में पर्याप्त विकास हो गया था। इस काल की नटराज शिव और पार्वती की नृत्य मुद्रा में उपलब्ध मूर्ति शास्त्रीय नृत्य कला का प्राचीनतम नमूना माना जाता है। इस काल में संगीत, नृत्य और वादन की कला पर्याप्त उन्नत थी। महाभारत में राजा विराट की पुत्री उत्तरा और उसकी सहेलियों के संगीत सीखने का वर्णन है। बौद्ध काल में आम्रपाली श्रेष्ठ वीणा वादक थी।

विश्वदेव वर्धन की रानी शान्तला अपने समय की प्रसिद्ध गीतकार और नृत्यांगना थी। रूपणिका नामक एक महिला ने तो कामसूत्र की 64 कलाओं का भी नृत्यभंगिमा में प्रदर्शन किया था। सम्राट हर्ष के नाटकों में भी इसका उल्लेख यत्र–तत्र मिलता है। चालुक्य शासक विक्रमादित्य बादामी की पत्नी ने संगीत व नृत्य के शिक्षा हेतु स्कूल स्थापित किये थे। मालवा की रानी रूपमती गायन में पारंगत थी। मीरा के कृष्ण प्रेम से कौन परिचित नहीं है, वह नृत्य और गायन के माध्यम से अपने गिरधर गोपाल को प्रसन्न करने में प्रयासरत रहती थी। इस बात में लोकगीत व लोकनृत्य के क्षेत्र में भी विकास हुआ।

मध्यकाल के अंतिम भाग में मुगल शासन की स्थापना के बाद संगीत व नृत्य के क्षेत्र में उन्नति

होने लगी क्योकि ये शासक उदार थे और संगीत व नृत्य प्रेमी थे। मुगलो के हरम और दरबार में ऐसी अनेक महिलाएं थी जो नृत्य और गायन के द्वारा उनका मनोरंजन किया करती थी। तानसेन की प्रेमिका भी एक महान गीतकार थी। जेबुन्निसा, बेगम महताब, शेख आदि उस समय की प्रसिद्ध महिला शायर थी। इस काल में विभिन्न राग–रागनियों और कत्थक नृत्य शैली का अच्छा विकास हुआ। नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में कत्थक शैली और ठुमरी का विशेष प्रचलन था। आज यद्यपि विभिन्न घरानों की शैलियाँ परस्पर घुलमिल गयी है परन्तु फिर भी ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर घराना आदि की पहचान और गुरु शिष्य परंपरा विद्यमान है।

आधुनिक काल में चित्रकला के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ। महिला चित्रकारों में सर्वप्रथम सुनयनी देवी का नाम आता है और इसके बाद की उल्लेखनीय चित्रकार अमृता शेरगिल है जिसने शैली, रंग योजना, भाव आदि सभी क्षेत्रों में नवीन प्रयोग किये और चित्रकाल को विकास की ओर उन्मुख किया जिसके कारण आधुनिक चित्रकला शैली उनकी ऋणी व आभारी है। रानीचन्दा और दमयन्ती चावला प्राचीन चित्रकला शैली में नये प्रयोगों के कारण प्रसिद्धि अर्जित करने में सफल रही। प्राणि–चित्रों और ग्रामीण शैली की प्रसिद्ध चित्रकारी का श्रेय षीला आडेन को दिया जाता है। उपर्युक्त महिला चित्रकारों के साथ–साथ इस क्षेत्र में गौरी भोजा, शारदा राजू, मनीशा पारिख, अंजुम सिंह, जयश्री चक्रवर्ती, श्रीमती जमुना देवी, श्रीमती राधा देवी, दीपिका हजारा, श्रीमती सरस्वती देवी, संतोक बा, अंजलि इला मेनन, जमुना सेन, अर्पिता सिंह, उशा भल्ला, फातिमा अहमद, अनुपम सूद आदि कई उल्लेखनीय महिला चित्रकार है जिन्होंने चित्रकला के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। भारत में निवास कर रही कुछ विदेशी महिलाओं ने भी चित्रकला के विकास पर ध्यान दिया इनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय नाम एलिजाबेथ ब्रुमर का है।

चित्रकला के साथ–साथ मूर्तिकला के क्षेत्र में भी इस युग में उत्थान हुआ। प्रसिद्ध महिला मूर्तिकारों में प्रभोज चौधरी, विद्या गुजराल, मीरा मुखर्जी आदि के नाम विशेष रूप से जाने जाते है। इनके द्वारा निर्मित की गई मूर्तियों में अंग सौष्ठव और चेहरे के भावों का संतुलन बनाये रखा गया है और मूर्तियाँ प्राणवान–सी प्रतीत होती है।

आधुनिक काल के प्रमुख संगीतज्ञों में पं० विष्णु दिगम्बर और श्री भातखण्डे के प्रयासों के फलस्वरूप संगीत को पुनः कुलीन घरानो में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई और संगीत के सार्वजनिक आयोजन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। स्कूलों और कॉलेजों में संगीत शिक्षा दी जाने लगी तथा कई संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना से शस्त्रीय संगीत को समाज में लोकप्रियता प्राप्त होने लगी। शास्त्रीय संगीत के प्रति लगाव, परिष्कृत रुचि और सामाजिक सम्मान का प्रतीक बन गया। महिला संगीतज्ञों को सम्मान व लोकप्रियता दिलाने में शिक्षण संस्थाओं के साथ–साथ आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत की।

हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में आधुनिक गायिकाओं में सिद्धेश्वरी देवी, गिरिजाबाई, हीराबाई बड़ोदकर, गंगू बाई हंगल, दीपाती नाग, लक्ष्मी शंकर, नैना देवी, उषा टंडन आदि के नाम प्रसिद्ध है। बेगम अख्तर गजल गायकी मानी जाती है। रविन्द्र संगीत में सुचित्रा मित्रा, संध्या मुखर्जी, कर्नाटक संगीत में सुब्बुलक्ष्मी व वसंत कुमारी, शास्त्रीय संगीत में शन्नो खुराना के नाम वर्णनीय है। सुगम संगीत और सिनेमा

संगीत में अनेक लोकप्रिय नाम हैं जो आकशवाणी और दूरदर्शन के माध्यम से अपनी प्रसिद्धि को बढ़ाने में संलग्न है। इनमें लता मंगेशकर का नाम सर्वाधिक प्रमुख है। अन्य प्रमुख गायिकाओं में अनुराधा पोडवाल, तीजन बाई, आशा भोंसले, बेगम अख्तर आदि अनेक महिलाओ का वर्णन प्राप्त होता है जो संगीत के प्रति पूरी तरह समर्पित है। संगीत उनके जीविकोपार्जन का एक माध्यम ही नहीं अपितु अन्नय लगाव का भी प्रमाण है जिसमें निरंतर संलग्न रहकर उन्हें विशेष आनंद की अनुभूति और संतोष अनुभव होता है।

वर्तमान समय में अन्य ललित कलाओं के साथ–साथ नृत्य कला के क्षेत्र में भी पर्याप्त विकास हुआ। दक्षिण भारत के मंदिरों में शास्त्रीय कला जो देवदासियों तक सीमित होकर रह गयी थी, उसे आधुनिक युग में प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और पुनर्विकास की ओर उन्मुख होने लगी। कृष्ण अय्यर के प्रयासों के फलस्वरूप कथकली और भरतनाट्यम नृत्य शैली विकास की ओर प्रशस्त हुई। इसमें बाला सरस्वती, वरलक्ष्मी और गौरी कत्याल का योगदान भी प्रशंसनीय रहा। नृत्य की कथक शैली के उत्थान में मेनका ने विशेष रूचि प्रदर्शित की और भारत व यूरोप में सार्वजनिक मंचों पर इसे प्रस्तुत किया। कांडला (मुम्बई) में एक कथक ट्रेनिंग स्कूल भी खोला गया। उनकी नृत्य नाटिकाओं का प्रमुख विषय 'राधाकृष्ण' है।

पूर्वांचल में नंदलाल बोस की पुत्री गौरी देवी ने मणिपुरी नृत्य को पुर्नस्थापित किया। इसी प्रकार इंद्राणी रहमान ने ओडिसी नृत्य को उड़ीसा के प्राचीन मंदिरो से बहार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इन्द्राणी ने ही 'कुचिपुड़ी' नृत्य को सर्वप्रथम विदेश में प्रदर्शित किया।

वस्तुतः ललित कला के विकास में सृजनात्मक प्रतिभा की धनि महिलाओं ने यह प्रमाणित कर दिया कि नारी केवल अबला और दासी नहीं है अपितु आत्म तत्वों को पहचानने वाली बौद्धिक क्षमता से युक्त महिला है। वह किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि महिलाओं का कलाओं के क्षेत्र में योगदान बहुमूल्य है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. खुराना एवं चौहान– *भारतीय इतिहास में महिलाएं*
2. पं० जगदीश नारायण पाठक– *संगीत निबंध माला*
3. डॉ० अनिता रानी– *संगीत निबंधावली*
4. ठाकुर जयदेव सिंह– *प्राचीन भारत में संगीत*
5. डॉ अषीर्वादी लाल– *मुगल काल में संगीत*
6. पत्र एवं पत्रिका
7. संगीत पत्रिका